देवांगना

देवेंद्र

देवांगना

देवेंद्र

गोपाल मंदिर के पिछवाड़े एक लंबी सुरंग की तरह अँधेरी गली है। यह गली एक पुराने खंडहरनुमा मकान के बड़े से फाटक तक जाकर बंद हो जाती है। बंद गली के इस आखिरी मकान का बड़ा सा आँगन और आँगन से लगे तेरह कमरों में अलग-अलग तरह के परिवार पुश्त-दर-पुश्त से एक साथ रहते चले आ रहे हैं। ऊब, तिरस्कार और सीलन से भरी एक अँधेरी कोठरी में यहीं चन्नर और भिक्खू के साथ एक तेरह साल की लड़की चंपी भी रहती है। अलग-अलग परिवारों के इस भरे-पूरे कुनबे में ब-मुश्किल ही कोई यह बता पाता है कि चंपी वास्तव में भिक्खू की नहीं चन्नर की बेटी है।

बच्चे पूरे दिन आँगन में उछल-कूद और मार-पीट करते रहते हैं। औरतें गेहूँ पछोरते हुए पड़ोसिनों की जासूसी करती रहती हैं। दिन भर के काम से फुर्सत पाकर शाम के समय, जब नल से पानी टपकने लगता और बाल्टियाँ खड़खड़ाने लगतीं, परकीया नायिकाओं में वीर रस का संचार होने लगता। गुप्त सूचनाएँ सार्वजनिक की जातीं। देर तक कुहराम मचा रहता। पति पत्नियों को बेरहमी से पीटते। पत्नियाँ सौतों को निर्ममता पूर्वक सरापतीं। शांत होने पर सब भर पेट भोजन करते और अपनी-अपनी माँदों में सो जाते। चेचक और हैजा और सिफलिस की शीत निद्रा जब यहाँ से भंग होती तो समूचा शहर श्मशानों की ओर भागता। तब भी यह आँगन चीखों और चिल्लाहटों के बीच अपनी जनसंख्या के प्रति सावधान बना रहता। चंपी भी इस आँगन में साझे की हकदार है। लेकिन कभी-कभार चड्ढी सुखाने या नल पर पानी भरने के अलावा वह आँगन का कोई उपयोग नहीं करती।

समूचा जीवन अभावों और उपेक्षाओं में बिता लेने के बाद हिंदुओं की बाल विधवाएँ पचास-पचपन की उम्र तक जाकर प्रचंड रूप से कामुक हो उठती हैं। उनके भीतर का क्षमा भाव खत्म हो जाता है। जबान दुधारी तलवार हो जाती है। सामने के ईंट-पत्थर भी रास्ता छोड़ देते। ऐसी ही एक औरत महीने की हर पहली तारीख को किराया वसूलने के लिए उस आँगन में प्रकट होती है। उसी समय सारे किराएदार इकट्ठा होकर अपनी-अपनी शिकायतें अरज करते कि - लैट्रिन का पत्थर टूट गया है और पानी डालने पर सारी गंदगी बहकर आँगन में चली जाती है। कोई दीवार के दरकने की तो कोई छत के टपकने की बातें बताता है।

बुढ़िया आँखों पर जोर देकर पैसे गिनते हुए अन्यमनस्क भाव से सब कुछ सुना करती। छोटे और नीच लोगों के मुँह लगना वह जरूरी नहीं समझती। अगर कोई हद ही कर देता तो चीख उठती - "हरामजादों, हमने